अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी – जैन धर्म विशारद (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) अन्तगड़ सूत्र में कितनी अन्तकृत आत्माओं का वर्णन है-
(क) 51 (ख) 39
(ग) 89 (घ) 90 (घ)

(b) अन्तगड़ सूत्र में 15 दिन का संथारा कितने जीवों को आया-
(क) 88 (ख) 01
(ग) 02 (घ) एक भी जीव को नहीं (ख)

(c) अन्तगड़ सूत्र में वर्णित कितने जीव आगामी काल में तीर्थंकर रूप में उत्पन्न होंगे-
(क) 2 (ख) 3
(ग) 1 (घ) अनेक जीव (ख)

(d) जयन्ती बाई का थोकड़ा भगवती सूत्र के कौनसे शतक में हैं-
(क) दसवें (ख) दूसरे
(ग) बारहवें (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(e) गति-आगति का थोकड़ा कौनसे सूत्रानुसार है-
(क) पन्नवणा (ख) भगवती
(ग) जीवाजीवाभिगम (घ) अनेक सूत्रानुसार (घ)

(f) स्थलचर कौनसी नरक तक जा सकता है -
(क) तीसरी (ख) चौथी
(ग) पाँचवीं (घ) सातवीं (ख)

(g) कौनसी नरक से आया हुआ केवली नहीं बनता है-
(क) 1 से 4 (ख) 1 से 3
(ग) 5 से 7 (घ) सातवीं (ग)

(h) गर्भज की गति है-
(क) 285 (ख) 371
(ग) 363 (घ) 563 (घ)

(i) देवलोकों में कितनी गति के जीव काल करके आ सकते हैं-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 4 (ख)

(j) 179 की लड़ में मनुष्य की कुल संख्या है-
(क) 101 (ख) 30
(ग) 131 (घ) शून्य (स)

(k) जैनागम कौनसी भाषा में रचित है-
(क) संस्कृत (ख) मागधी प्राकृत
(ग) अर्द्धमागधी प्राकृत (घ) हिन्दी (स)

(l) कालिक उत्कालिक सूत्रों के भेद बतलाये हैं
(क) दशवैकालिक में (ख) आचारांग में
(ग) सुखविपाक में (घ) नन्दी सूत्र में (घ)

(m) पौषध व्रत कौनसा शिक्षा व्रत है-
(क) 11वाँ (ख) तीसरा
(ग) 10वाँ (घ) शिक्षा व्रत नहीं है (ख)

(n) तारे के टूटने पर कितने प्रहर की अस्वाध्याय होती है-
(क) 2 (ख) 1
(ग) जब तक तारा टूटता दिखे (घ) नहीं होती (ख)

(o) कितनी संध्याएँ अस्वाध्याय योग्य हैं-
(क) 12 (ख) 04
(ग) 01 (घ) शून्य (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(a) युगलिक अपर्याप्त अवस्था में कभी नहीं मरते। (हाँ)

(b) चक्रवर्ती तथा बलदेव की देवों से आगति समान है। (हाँ)

(c) सम्यक्दृष्टि स्त्री सातवीं नरक में नहीं जाती है, मिथ्यादृष्टि जा सकती है। (नहीं)

(d) चक्रवर्ती कभी दीक्षा ग्रहण नहीं करते हैं। (नहीं)

(e) पुरुषोत्तम दृढनेमि ने राजमती के सुभाषित वचनों से अपना मन भोगों से मोड़ लिया। (नहीं)

(f) दशवैकालिक के प्रथम अध्ययन में श्रमणों की तुलना मधुकर से की है। (हाँ)

(g) दशवैकालिक के दूसरे अध्ययनानुसार सुकुमारपन का परित्याग करने पर जीव सुखी होता है। (हाँ)

(h) दशवैकालिक सूत्रानुसार क्रोध मित्रता को नष्ट करता है। (नहीं)

(i) सूत्रकृतांग के अनुसार जीव की हिंसा नहीं करना ही ज्ञान का सार है। (हाँ)

(j) अन्तगड़ सूत्र में वर्णित सभी जीवों का निर्वाण स्थल कोई न कोई पर्वत रहा है। (नहीं)

(k) भगवती सूत्रानुसार सभी जीव जागते हुए ही अच्छे हैं। (नहीं)

(l) भगवती सूत्रानुसार भवसिद्धिपना परिणाम से है। (नहीं)

(m) व्यवहार राशि में सिर्फ भवी जीव है। (नहीं)

(n) अष्ट प्रातिहार्यों में प्रथम 'अशोक वृक्ष' है। (हाँ)

(o) भगवान पुरुषों में उत्तम होने से नारायण है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(a)	निहुओ	(क) 395	एकाग्र मन से
(b)	पीणेइ	(ख) आर्या यक्षिणी	तृप्त कर लेता है
(c)	परिव्वयंतो	(ग) मध्य में तेले की तपस्या	विचरते हुए
(d)	भगवान महावीर	(घ) तृप्त कर लेता है	आर्या चन्दन बाला
(e)	भगवान अरिष्टनेमि	(च) 276	आर्या यक्षिणी
(f)	रतनावली तप	(छ) प्रमार्जन न किया हो	मध्य में बेले की तपस्या
(g)	कनकावली तप	(ज) धूल छा जाने रूप	मध्य में तेले की तपस्या
(h)	असन्नी तिर्यंच पंचे. की गति	(झ) अव्रती से वैयावृत्य करवाना	395
(i)	जलचर की आगति	(य) एकाग्र मन से	267
(j)	नोगर्भज की आगति	(र) अप्काय रूप	329
(k)	माण्डलिक राजा की आगति	(ल) आर्या चन्दन बाला	276
(l)	महिका	(व) 329	अप्काय रूप
(m)	रजोद्घात	(क्ष) 267	धूल छा जाने रूप
(n)	पौषध का अतिचार	(त्र) विचरते हुए	प्रमार्जन न किया हो
(o)	पौषध का दोष	(ज्ञ) मध्य में बेले की तपस्या	अव्रती से वैयावृत्य करवाना

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(a)	मैं भोगराज उग्रसेन की पुत्री हूँ।	राजीमति
(b)	गजसुकुमाल मेरे लघु भ्राता थे।	श्री कृष्ण वासुदेव
(c)	मैं ऐसा तप हूँ, जिसमें 1 से 100 तक बढ़ाते हुए आयंबिल किये जाते हैं।	आयंबिल वर्धमान तप
(d)	मेरी गति भवनपति वाणव्यन्तर देवों में ही है।	56 अन्तरद्वीपज मनुष्य
(e)	मेरी तथा असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की गति समान है।	नोगर्भज
(f)	मैं ऐसा मनुष्य हूँ, जो अपर्याप्त अवस्था में ही काल करता हूँ।	सम्मूर्च्छिम
(g)	मेरी आगति 38 की है।	तीर्थंकर
(h)	मेरी गति 10 की है।	सातवीं नरक
(i)	मेरी आगति 275 की है।	आराधक साधु
(j)	मेंने योग शास्त्र में रात्रि भोजन का निषेध किया है।	आचार्य हेमचन्द्र
(k)	हम स्याद्वाद सिद्धान्त से अनुप्राणित हैं।	आगम
(l)	मुझे देश पौषध भी कहते हैं।	दसवाँ पौषध
(m)	मैं अंतिम मूलसूत्र हूँ।	अनुयोग द्वार
(n)	माधवमुनि ने रात्रि भोजन को मेरी उपमा दी है।	रावण/राक्षस
(o)	मुझे वर्तमान आगमों को लिपिबद्ध करने का श्रेय है।	आचार्य देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(a) किस कारण से जीव संसार को बढ़ाता है ?

उ. अठारह पापों के आचरण से जीव संसार बढ़ाता है

(b) व्यवहार तथा अव्यवहार राशि में कोई एक अन्तर लिखिए।

उ. नोटः- इन तीनों में से कोई एक अन्तर मान्य है-

1. व्यवहार राशि में भवी तथा अभवी दोनों तरह के जीव होते हैं,जबकि अव्यवहार राशि में मात्र भवी जीव ही होते हैं।

2. अव्यवहार राशि से कोई जीव मोक्ष में नहीं जा सकता, जबकि व्यवहार राशि में से भवी जीव मोक्ष में जाते हैं।

3. अव्यवहार राशि के सारे जीव व्यवहार राशि में नहीं आते हैं, जबकि व्यवहार राशि के सारे भवी जीव मोक्ष में जाते हैं।

(c) जयन्ती ने किस तरह दीक्षा ली और अन्त में किस गति को प्राप्त हुई ?

उ. देवानन्दा की तरह दीक्षा लेकर और केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्ष गति को प्राप्त किया।

(d) मुझ तुल्य ही..........................अर्थ है। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. मुझ तुल्य ही नर-नारियों का, जन्म जग में व्यर्थ है,
मानो जिनेश्वर! वह भवों की, पूर्णता के अर्थ है।।

(e) अध्यात्म विद्या..........................होवेगा भला। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. अध्यात्म विद्या है न मुझमें, है न कोई सत्कला,
फिर देव! कैसे यह भवोदधि पार होवेगा भला ।।

(f) ''जहा दुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवियइ रसं।'' उक्त पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. जैसे भँवरा फूलों पर प्राकृतिक मर्यादा से रसपान करके अपना पोषण कर लेता है।

(g) ''समाइ पेहाइ परिव्वियंतो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा।'' उक्त पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. राग-द्वेष रहित होकर शान्त व सम दृष्टि से साधना मार्ग पर चलते हुए भी कदाचित् कभी किसी साधक का मन संयम से बाहर निकल जाय।

(h) ''मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।'' उक्त पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उ. हरि, हर आदि देवों का देखना अच्छा है क्योंकि जब हम उन्हें राग-द्वेषादि से भरे पाते हें तो आपको वीतराग पाकर हृदय में सन्तोष होता है

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3 = (24)**

(a) एमे ए समणा..........................रया।। गाथा को पूर्ण कीजिए।

उ. एमे ए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो ।
विहंगमा व पुप्फेसु, दाण - भत्तेसणा रया ।।

(b) धिरत्थु.........................मरणं भवे।। गाथा को पूर्ण कीजिए।

उ. धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीविय-कारणा।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे।।

(c) सोही..........................पावए।। गाथा को पूर्ण कीजिए।

उ. सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ, घय-सित्तव्व पावए।।

(d) जरा जाव..........................समायरे।। गाथा को पूर्ण कीजिए।

उ. जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।।

(e) सत्कर्म पहले..........................कैसे नष्ट हो।। पद्य को पूर्ण कीजिए।

उ. सत्कर्म पहले जन्म में, मैंने किया कोई नहीं
आशा नहीं जनमान्य में, उसको करूँगा में कहीं।

(f) शुभकेलि के..........................आचार में।। पद्य को पूर्ण कीजिए।

उ. शुभकेलि के आनन्द के, धन के मनोहर धाम हो,
नरनाथ से सुरनाथ से, पूजितचरण गतकाम हो।
सर्वज्ञ हो सर्वोच्च हो, सब से सदा संसार में,
प्रज्ञा कला के सिन्धु हो, आदर्श हो आचार में।।

(g) नित्योदयं..........................शशांक बिम्बम्।। श्लोक को पूर्ण कीजिए।

उ. नित्योदयं दलित-मोह-महांधकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कांति,
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांकबिम्बम्।।

(h) स्त्रीणां..........................स्फुरदंशुजालम्।। श्लोक पूर्ण कीजिए।

उ. स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम्।।

कक्षा : छठी – जैन धर्म विशारद (परीक्षा 16 जुलाई, 2017)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) अन्तगड़ सूत्र में भगवान महावीर के शासन की कितनी आत्माओं का वर्णन है-

(क) 51 (ख) 57

(ग) 33 (घ) 39 (घ)

(b) थलचर कौनसी नरक तक जा सकता है-

(क) दूसरी (ख) तीसरी

(ग) चौथी (घ) पाँचवीं (ग)

(c) कौनसी नरक से निकलने वाला साधु नहीं बन सकता है -

(क) छठी (ख) सातवीं

(ग) छठी-सातवीं (घ) कोई नहीं (ग)

(d) नो गर्भज की आगति है-

(क) 395 (ख) 285

(ग) 363 (घ) 329 (घ)

(e) हरिवास की गति है-

(क) 30 (ख) 40

(ग) 126 (घ) 124 (ग)

(f) जीवों का भवसिद्धिपना है-

(क) स्वभाव से (ख) परिणाम से

(ग) दोनों से (घ) कोई नहीं (क)

(g) अंतगड़ सूत्र में वर्णित साध्वियों ने अध्ययन किया -

(क) 11 अंग (ख) 12 अंग

(ग) 14 पूर्व (घ) 10 पूर्व (क)

(h) दशवैकालिक का श्रामण्यपूर्वक अध्ययन है-

(क) पहला (ख) दूसरा

(ग) तीसरा (घ) चौथा (ख)

(i) अस्वाध्याय के 34 कारणों में आकाश सम्बंधी है-

(क) 10 (ख) 5

(ग) 4 (घ) कोई नहीं (क)

(j) उत्तराध्ययन सूत्र है-

(क) आवश्यक सूत्र (ख)मूल सूत्र

(ग) अंग सूत्र (घ) उपांग सूत्र (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) पौषध के निमित्त आभूषण पहन सकते हैं। (नहीं)

(b) ग्यारहवाँ पौषध देश पौषध है। (हाँ)

(c) आत्मागम भी आगम का एक भेद है। (हाँ)

(d) मिहिका सूक्ष्म अप्‌काय है। (हाँ)

(e) इन्द्र महोत्सव के दिनों में स्वाध्याय करना चाहिए। (नहीं)

(f) सातवीं नरक में सिर्फ तिर्यञ्च आते हैं। (नहीं)

(g) मनुष्य मरकर तेउकाय, वायुकाय के जीव नहीं बनते हैं। (नहीं)

(h) युगलिक को छोड़ शेष मनुष्य एवं तिर्यञ्च 179 की लड़ में हैं। (हाँ)

(i) अंतगड़ में वर्णित सेठ सुदर्शन ने दर्शन आराधना की। (हाँ)

(j) अंतगड़ में वर्णित भगवान महावीर के शासन की सभी आत्माएँ विपुलगिरि पर्वत पर निर्वाण को प्राप्त हुई। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) मैं उत्कृष्ट मंगल हूँ। श्रुतचारित्र रूप धर्म

(b) मैं वमन किये विष को पुनः ग्रहण नहीं करता हूँ। अगंधन कुल का सर्प

(c) मुझ श्रमणोपासिका ने भगवान महावीर से अनेक प्रश्न किये। जयंती बाई

(d) हम ऐसे मनुष्य हैं जो अपर्याप्त अवस्था में अमर हैं। युगलिक मनुष्य/अकर्मभूमिज मनुष्य

(e) मेरी आगति 108 की है। केवली

(f) मेरी गति 535 की है। माण्डलिक राजा

(g) मैं अर्द्धमागधी भाषा में रचित हूँ। जैन आगम

(h) मेरे तीसरे अध्ययन में 52 अनाचीर्ण बताये गये हैं। दशवैकालिक सूत्र

(i) हम ऐसे सूत्र हैं जिनमें प्रायश्चित्त आदि का विधान है। छेद सूत्र

(j) मेरी आराधना से आत्म-शांति का पोषण होता है। पौषध व्रत

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2=(28)**

(a) **'संसार.................दिया।' रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।**

उ संसार ठगने के लिए, वैराग्य को धारण किया,

जग को रिझाने के लिए, उपदेश धर्मों का दिया।

(b) **'मैं यत्न.................बच सकता नहीं।' रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।**

उ मैं यत्न करता हूँ दवा में, धर्म में करता नहीं,

दुर्मोह-महिमा से ग्रसित हूँ, नाथ! बच सकता नहीं।

(c) **'नरजन्म.................रोता रहा।' रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।**

उ नर-जन्म पाकर भी वृथा ही, मैं उसे खोता रहा,

मानो अकेला घोर वन में, व्यर्थ ही रोता रहा।

(d) **'माता-पिता.................लीलावती।' रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।**

उ माता पिता के सामने, बोली सुनाकर तोतली,

करता नहीं क्या अज्ञ बालक, बाल्य-वश लीलावली?

(e) **यूपक का अर्थ लिखिए।**

उ यूपक- शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया और तृतीया को चन्द्रमा की प्रभा का मिल जाना यूपक कहलाता है।

(f) **आगम स्वाध्याय से प्राप्त दो लाभ लिखिए।**

उ 1 सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति होती है।

2 आगम, स्वाध्याय रूप तप होने से कर्मों की निर्जरा होती है।

3 काम भोगों से विरति होती है, त्याग-मार्ग में प्रवृत्ति होती है।

4 कषाय का उपशमन होने से मन शांत एवं स्वच्छ होता है।

5 अपूर्व सुख एवं शांति का अनुभव होता है।

6 संसार परीत होता है, आत्मा निर्मल तथा विशुद्धहोती है।

(नोट- इनमें से कोई दो)

(g) **कौन-कौन से युगलिक मनुष्य कौन-कौन से देवलोक में उत्पन्न होते हैं ?**

उ देवकुरु-उत्तरकुरु के युगलिक - पहले किल्विषिक तक

हरिवास-रम्यक्वास के युगलिक - दूसरे देवलोक तक

हेमवत-हैरण्यवत के युगलिक - पहले देवलोक तक

56 अन्तर्द्वीप के युगलिक - भवनपति एवं वाणव्यंतर तक उत्पन्न होते हैं।

(h) **जलचर की गति समझाकर लिखिए।**

उ जलचर की गति 527 की- (नौवें देवलोक से सर्वार्थसिद्ध विमान पर्यन्त के 18 जाति के देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता, इन 36 भेदों (जीवों) को 563 में से छोड़कर)।

(I) **साधुजी की गति विवेचन सहित लिखिए।**

उ गति- 70 जाति के देवता (12 देवलोक, 9 लोकान्तिक, 9 ग्रैवेयक,5 अनुत्तर विमान इन 35 के पर्याप्त और अपर्याप्त) अथवा मोक्ष ।

(j) **'अप्पा कत्ता.................सुप्पट्ठिओ।।' रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।**

उ अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य ।

अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिय-सुप्पट्ठिओ ।।

(k) **'कोहो.................विणासणो।।' रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।**

उ कोहो पीइं पणासेइ, मणो विणयणासणो।

माया मित्ताणि णासेइ, लोहो सव्व विणासणो।।

(l) **अंतगड़ में वर्णित आत्माओं को कितने-कितने दिनों का संथारा आया ?**

उ 1 गजसुकुमालजी के संथारा नहीं (व्यवहार रूप से)

2 अर्जुन मालाकार के संथारा 15 दिन का

3 अन्य 88 आत्माओं के संथारा 30-30 दिन का।

(m) **अंतगड़ सूत्र में उल्लेखित कोई चार तपों के नाम लिखिए।**

उ 1 भिक्षु प्रतिमाएँ, 2 गुणरत्न संवत्सर, 3 रत्नावली, 4 कनकावली,

5 लघुसिंह निष्क्रीड़ित, 6 महासिंह निष्क्रीड़ित, 7 लघुसर्वतोभद्र, 8 महासर्वतो भद्र,

9 आयम्बिल वर्धमान तप, 10 मुक्तावली तप। (नोट- इनमें से कोई चार तप के नाम)

(n) **अंतगड़ में वर्णित भगवान अरिष्टनेमि एवं भगवान महावीर के शासन की साध्वी प्रमुखा का नाम लिखिए।**

उ भगवान अरिष्टनेमि की - यक्षिणी

.भगवान महावीर की - चंदनबाला।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) **''वयं च.................भमरा जहा।।'' रिक्त स्थान को पूर्ण कर अर्थ लिखिए।**

उ वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ।

अहागडेसु रीयंते, पुप्फेसु भमरा जहा।।

भावार्थ- शिष्य गुरुदेव के चरणों में यह प्रतिज्ञा करते हैं कि जिस प्रकार भँवरा फूलों से रस लेने में किसी को कष्ट नहीं पहूँचाता है। हम भी ऐसी रीति अपनायेंगे, जिससे की किसी को किसी प्रकार का कष्ट न हो। फूलों पर भँवरों की तरह गृहस्थ के यहाँ उनके उपभोग के लिए बनाये आहार में से ही थोड़ा-थोड़ा हम ग्रहण करेंगे।

(b) **''कहं नु................वसंगओ।।'' रिक्त स्थान को पूर्ण कर अर्थ लिखिए।**

उ कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए।

पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसंगओ।।

भावार्थ- जो साधक कामनाओं का निवारण नहीं कर सकता, वह श्रमण धर्म का पालन कैसे करेगा?क्योंकि कामनाओं के आधीन पुरुष संकल्प विकल्प के वशीभूत होकर, पग-पग पर खेद प्राप्त करता है।

(c) **''अप्पा चेव.................परत्थ य।।'' रिक्त स्थान को पूर्ण कर अर्थ लिखिए।**

उ अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।

अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य।।

अर्थ- अपनी आत्मा का ही दमन (वश में करना, संयमित करना) करना चाहिये, क्योंकि आत्मा का दमन ही कठिन है। दमन की गयी आत्मा ही इस लोक तथा परलोक दोनों में सुखी होती है।

(d) **''जो पुव्वरत्तावरत्त.................समायरामि।।'' रिक्त स्थान को पूर्ण कर अर्थ लिखिए।**

उ जो पुव्वरत्तावरत्त काले,संपेहए अप्पगमप्पएणं।

किं मे कडं, कि च मे किच्चसेसं, कि सक्कणिज्जं ण समायरामि

अर्थ- साधक रात्रि के प्रथम और अंतिम प्रहर में अपना आत्मालोचन एवं आत्मनिरीक्षण करते हुए अपने-आपको सम्यक् प्रकार से देखे, सोचे कि मैने क्या कार्य किया है, मेरे लिये क्या कार्य करना

शेष है और वह कौनसा कार्य है जिसे में कर सकता हूँ, परन्तु प्रमादवश नहीं कर पाता हूँ।

(e) **‘‘आयावयाहि.................संपराए।।’’ रिक्त स्थान को पूर्ण कर अर्थ लिखिए।**

उ आयावयाहि चय सोगमल्लं, कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं।

छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए।।

उ भावार्थ-शीत और गर्मी की आतापना लेते हुए सुकुमारता का परित्याग करो एवं कामनाओं का निवारण करो तो दुःख दूर हुआ समझो। द्वेष का छेदन करो और राग को अलग करो, ऐसा करने से संसार में सुखी हो जाओगे।

(f) **‘‘जइ तं काहिसि.................भविस्ससि।।’’ रिक्त स्थान को पूर्ण कर अर्थ लिखिए।**

उ जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ।

वायविद्धो व्व हडो, अट्ठि-अप्पा भविस्ससि।।

भावार्थ- हे मुने! यदि तू जिन-जिन नारियों को देखेगा और उन पर विकारी भाव करेगा तो तू तेज हवा से कम्पित हड वृक्ष की तरह अस्थिर आत्मा वाला हो जाएगा।

(g) **श्रौत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव कैसे कर्म बान्धता है ?**

उ आयुष्य कर्म को छोड़कर बाकी सात कर्मो की प्रकृति यदि ढीली हो तो गाढ़ी-दृढ़ करता है। थोड़े काल की स्थिति हो तो बहुत काल की स्थिति करता है। मंद रस वाली हो तो तीव्र रस वाली करता है। आयुष्य बांधता है अथवा नहीं भी बांधता है। असातावेदनीय कर्म बार-बार बांधता है और चार गति रूप संसार में परिभ्रमण करता रहता है।

(h) **जीव सोते हुए अच्छे कैसे ? लिखिए।**

उ जो जीव अधर्मी हैं, अधर्म का काम करते हैं, अधर्म का उपदेश देते हैं, अधर्म में आनंद मानते हैं, यावत् अधर्म से आजीविका करते हैं, वे जीव सोते हुए अच्छे हैं। सोते रहने पर वे सभी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व को दुःख नहीं दे पाते, यावत् परितापना नहीं उपजाते, अपनी तथा दूसरों की आत्मा को अधर्म में नहीं जोड़ते। इस कारण अधर्मी जीव सोते हुए अच्छे है।

(i) **18 पापों के सेवन से होने वाली तीन हानियाँ लिखिए।**

उ 1 जीव भारी बनता है। 2 जीव संसार बढ़ाता है।

3 जीव कर्मो की स्थिति बढ़ाता है। 4 जीव संसार सागर में रुलता रहता है।

(नोट- इनमें से कोई तीन)

(j) **भवनपति देवों की आगति समझाकर लिखिए।**

उ आगति 111 की(101 सन्नी मनुष्य, 5 सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय एवं 5 असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, इन सब के पर्याप्ता)

(k) **‘‘नास्तं................लोके।।’’ रिक्त स्थान को पूर्ण कर अर्थ लिखिए।**

उ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति।

नाम्भोधरोदर-निरूद्ध-महाप्रभावः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र! लोके।।

भावार्थ-इसमें सूर्य व भगवान की तुलना करते हुए बताया है कि सूर्य शाम को अस्त हो जाता है, उसे बादल ढक लेते हैं, राहू ग्रस लेता है, किंतु आपका महातेज इन दोषों से रहित है तथा तीनों लोक को एक साथ प्रकाशित करने वाला है।

(l) **''गम्भीर.................प्रवादी।।'' रिक्त स्थान को पूर्ण कर अर्थ लिखिए।**

उ गंभीर-तार-रवपूरित-दिग्विभाग- स्त्रैलोक्यलोक- शुभसंगम - भूतिदक्षः।

सद्धर्मराज - जयघोषण - घोषक : सन्, खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी।।

भावार्थ- इस श्लोक में पंचम 'देव दुन्दुभि' नामक प्रातिहार्य का वर्णन है। यह दुन्दुभि भगवान के धर्मराज होने की सर्वत्र घोषणा करती है।

(m) **''किं शर्वरीषु.................कियज्जलधरै र्जलभार नम्रैः।।'' का भावार्थ लिखिए।**

उ भावार्थ- जब धान्य पक जाता है तब वहाँ बादलों के बरसने से कोई लाभ नहीं है, उसी प्रकार जहाँ आपके मुख रूपी चंद्रमा से अज्ञानान्धकार नष्ट हो चुका हो वहाँ रात्रि में चंद्रमा की चाँदनी (शीतलता) तथा दिन में सूर्य के प्रकाश (ताप) से क्या प्रयोजन ?

(n) **''तुभ्यं नमस्त्रि भुवनार्तिहराय.................भवोदधि-शोषणाय।'' का भावार्थ लिखिए।**

उ भावार्थ- इसमें भगवान को त्रिभुवन की पीड़ा हरने वाला, पृथ्वी तल का निर्मल भूषण, जगत् का परमेश्वर तथा संसार समुद्र को सुखाने वाला बताकर नमस्कार किया गया है।

कक्षा : छठी – जैन धर्म विशारद (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) लोभ से नाश होता है-
(क) प्रीति का (ख) विनय का
(ग) मित्रता का (घ) सद्गुणों का (घ)

(b) 'रत्नाकर पच्चीसी' में प्रभु के लिए सम्बोधन है-
(क) पूज्य (ख) लोकेश
(ग) गतराग (घ) उपर्युक्त सभी (घ)

(c) चतुर्थ प्रातिहार्य कौनसा है -
(क) छत्र (ख) देव दुन्दुभि
(ग) अशोक वृक्ष (घ) कोई नहीं (क)

(d) अन्तकृत दशा सूत्र में अनुयोग द्वार हैं-
(क)संख्यात (ख) असंख्यात
(ग) अनन्त (घ) 10 (क)

(e) वर्तमान अन्तकृत दशा सूत्र निम्न सूत्र में वर्णित अन्तकृत सूत्र के समान है-
(क) समवायांग (ख) नन्दी
(ग) दोनों (घ) दोनों ही नहीं (ख)

(f) अन्तकृत सूत्र में वर्णित कितनी आत्माओं को संथारा आया-
(क) 90 (ख) 89
(ग) 88 (घ) 01 (ख)

(g) अन्तकृत सूत्र में वर्णित कितनी आत्माओं को परीषह आये-
(क) 88 (ख) 02
(ग) 90 (घ) 01 (ख)

(h) अन्तगड़ में वर्णित सेठ सुदर्शन किसका उदाहरण है-
(क)ज्ञानाराधना (ख) दर्शनाराधना
(ग) चारित्राराधना (घ) कोई नहीं (ख)

(i) जलचर कौनसी नरक तक जा सकता है-
(क) छठी (ख) सातवीं
(ग) पाँचवीं (घ) कोई नहीं (ख)

(j) तीसरी नरक से आने वाला बन सकता है-
(क) तीर्थंकर (ख)केवली
(ग) साधु (घ) उपर्युक्त सभी (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) सन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय मरकर सातवीं नारकी में नहीं जाता है। (नहीं)
(b) चौथी नरक से आने वाला केवली बन सकता है। (हाँ)
(c) वायुकाय के जीवों को तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय बनने पर सम्यक्त्व प्राप्त हो सकता है। (नहीं)
(d) अपर्याप्त अवस्था में काल करने पर नियमा तिर्यञ्च बनते हैं। (नहीं)
(e) मेघ का गर्जन होने पर एक प्रहर का अस्वाध्याय होता है। (नहीं)
(f) अशुचि दिखते भी स्वाध्याय कर सकते हैं। (नहीं)
(g) 'श्रावण कृष्णा प्रतिपदा' को स्वाध्याय कर सकते हैं। (नहीं)
(h) 'जैनागम' अर्द्धमागधी भाषा में रचित हैं। (हाँ)
(i) सूत्र रूप से आगम सादि-सान्त हैं। (हाँ)
(j) 'आचारांग सूत्र' मूल सूत्र है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- 10x1=(10)

(a)	द्वादशांगी सूत्र रूप में मेरी रचना है।	आर्य सुधर्मा
(b)	मुझमें साधुओं के प्रायश्चित्त आदि का विधान है।	छेद सूत्र
(c)	मैं ऐसा पौषध हूँ, जिसमें दिन में प्रासुक जल ग्रहण कर सकते हैं।	दशवाँ पोषध/देश पोषध
(d)	मेरी आगति 329 की है।	नो गर्भज
(e)	मेरी आगति 32 की है।	वासुदेव
(f)	मेरी गति 517 की है।	भुजपरिसर्प
(g)	मेरी आगति 285 की है।	नपुंसक वेद/गर्भज
(h)	अन्तगड़ में वर्णित सबसे अधिक दीक्षापर्याय मेरी है।	एवन्ता मुनि
(i)	अन्तगड़ में वर्णित मैं 'पद्मनाभ' तीर्थंकर बनूँगा।	राजा श्रेणिक
(j)	अन्तगड़ में वर्णित मुझे विशेष श्रुतज्ञान का अध्ययन नहीं हुआ।	गजसुकुमाल

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2=(28)

(a) 'वर्धमान आयम्बिल' तप कैसे किया जाता है ?

उ. चौदहवाँ आयंबिल वर्धमान तप है। इसमें 1 से 100 तक आयंबिल बढ़ाये जाते हैं। पारणे के दिन बीच में उपवास किया जाता है। आयंबिल के कुल 5050 दिन और 100 दिन उपवास के होते हैं। साधारण दिखने पर भी यह तप बड़ा महत्त्वशाली और कठिन है।

(b) भवसिद्धिक जीवों के मोक्ष जाने पर लोक भवसिद्धिक जीवों से रहित नहीं होगा। कैसे? एक उदाहरण दीजिए।

उ. 1. जैसे आकाश की क्षेणी अनादि अनन्त हैं। उसमें से एक-एक परमाणु खण्ड जितना प्रदेश एक एक समय में निकाले। इस प्रकार निकालते-निकालते अनन्ती अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी पूरी हो जाय, तो भी यह आकाश श्रेणी खाली नहीं होती ।

2. जैसे भविष्यत्काल वर्तमान में आता है और एक समय बाद भूत में चला जाता है। यह क्रम अनादिकाल से चल रहा है और अनन्त काल तक चलेगा। किन्तु फिर भी भविष्यत् काल का कभी अन्त नहीं होगा।

(c) भवी जीव कौनसी राशि में मिलते हैं ?

उ. भवी जीव व्यवहार और अव्यवहार दोनो राशि में मिलते हैं।

(d) कौनसे जीव सोते हुए अच्छे हैं ?

उ. जो जीव अधर्मी है, अधर्म का काम करते हैं, अधर्म का उपदेश देते हैं, अधर्म में आनन्द मानते हैं, यावत् अधर्म से आजीविका करते हैं, वे जीव सोते हुए अच्छे हैं।

(e) 18 पापों के आचरण से होने वाली दो हानियाँ लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई दो-

1. 18 पापों के आचरण से जीव भारी होता है।
2. 18 पापों के आचरण से जीव संसार बढ़ाता है।
3. 18 पापों के आचरण करके जीव कर्मों की स्थिति बढ़ाता है।
4. 18 पापों के सेवन से जीव संसार-सागर में रुलता रहता है।

(f) जिसका उद्यम अच्छा है, वह क्या करेगा ?

उ. जिसका उद्यम अच्छा होगा वह आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी यावत् स्वधर्मी की वैयावच्च (सेवा) में अपनी आत्मा को जोड़ेगा।

(g) समुच्चय जीव की आगति 371 कैसे ? लिखिए।

उ. 563 में से 7 नारकी, 86 युगलिक मनुष्य और 99 जाति के देवता, इन 192 के अपर्याप्ता को छोड़कर, क्योंकि ये अपर्याप्त अवस्था में काल नहीं करते हैं।

(h) 179 की लड़ को लिखिए।

उ. 101 सम्मूर्च्छिम मनुष्य, 30 कर्मभूमिज मनुष्य, 48 तिर्यंच।

(i) सम्यग्दृष्टि की आगति को समझाइए।

उ. सम्यग्दृष्टि की आगति 363 की- समुच्चय जीव की आगति 371 में से तेऊकाय, वायुकाय के 8 छोड़कर।

(j) देवकुरु की गति को समझाइए।

उ. देवकुरु की गति 128 की- 64 जाति के देवता के पर्याप्ता और अपर्याप्ता।

(k) 12 देवलोकों की आगति की मात्र संख्या लिखिए।

उ. पहले देवलोक की आगति 50, दूसरे देवलोक की 40, तीसरे से आठवें देवलोक तक, 9 लोकान्तिक और दूसरा-तीसरा किल्विषी इन 17 प्रकार के देवों की आगति 20 की, नवमें देवलोक से सर्वार्थसिद्ध विमान तक के देवों की आगति 15 की।

(l) आगम के कोई दो लक्षण लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई दो-

1. ये आप्त पुरुषों के वचन हैं।
2. ये वीतराग द्वारा प्रणीत होने से सर्वजीवों के लिए एकांत हितकर होते हैं।
3. आगम त्रिकाल-सत्य सिद्धान्तों का संग्रह है।
4. आगम स्याद्वाद सिद्धान्त से अनुप्राणित (ओतप्रोत) होते हैं।

(m) अनन्तरागम तथा परम्परागम में अन्तर लिखिए।

उ. तीर्थंकर द्वारा कथित अर्थ उनके स्वयं के लिये आत्मागम कहलाते हैं। गणधर रचित सूत्र रूप आगम गणधर के लिये आत्मागम है और अर्थ रूप आगम उनके लिये अनन्तरागम है। गणधरों के शिष्यों के लिये सूत्र-आगम अनन्तरागम तथा अर्थ आगम परम्परागम है।

(n) स्वाध्याय से होने वाले दो लाभ लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई दो-

1. सम्यक् ज्ञान की प्राप्ति होती है।
2. आगम, स्वाध्याय रूप तप होने से कर्मों की निर्जरा होती है।
3. काम भोगों से विरति होती है, त्याग मार्ग में प्रवृत्ति होती है।
4. कषायों का उपशमन होने से मन शांत एवं स्वच्छ होता है।
5. अपूर्व सुख एवं शांति का अनुभव होता है।
6. संसार परीत होता है, आत्मा निर्मल तथा विशुद्ध होती है।

प्र.5 निम्न रिक्त स्थानों को पूर्ण कीजिए: - 14x3=(12)

(a) पर दोष...हे प्रभो!

उ. पर दोष को कह जीभ मेरी, है सदा दूषित हुई,
लख कर पराई नारियाँ हा! आँख भी दूषित हुई।
मन भी मलिन है सोच कर, पर की बुराई हे प्रभो!

(b) प्रत्यक्ष...रहते हुए।

उ. प्रत्यक्ष सुखकर जैन मत में, प्रीति मेरी थी नहीं,
जिननाथ! मेरी देखिये, है मूढ़ता भारी यही।
हा! कामधुक् कल्पद्रुमादिक, के यहाँ रहते हुए।

(c) सत्कर्म...कष्ट हो।

उ. सत्कर्म पहले जन्म में, मैने किया कोई नहीं
आशा नहीं जनमान्य में, उसको करूँगा में कहीं।
इस भाँति का यदि हूँ जिनेश्वर! क्यों न मुझको कष्ट हो।

(d) महुगार..साहुणो।।

उ. महुगार समाबुद्धा, जे भवंति अणिस्सिया।
नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुणो।।

(e) धिरत्थु..मरणं भवे।।

उ. धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीविय-कारणा।
वंतं इच्छसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे।।

(f) समाई...रागं।।

उ. समाई पेहाइ परिव्वयंतो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा।
न सा महं नो वि अहं पि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं।।

(g) धम्मो...मणो।।

उ. धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो।।

(h) कहं नु...वसंगओ।।

उ. कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए।
पए पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसंगओ।।

(i) अप्पा...परत्थ य।।

उ. अप्पा चेव दमेयव्वो, अप्पा हु खलु दुद्दमो।
अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सिं लोए परत्थ य।।

(j) जरा...समायरे।।

उ. जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढइ।
जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।।

(k) सोही ....पावए।।

उ. सोही उज्जुयभूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई।
निव्वाणं परमं जाइ, घय-सित्तव्व पावए।।

(l) नित्योदयं ....शशांकबिम्बम्।।

उ. नित्योदयं दलित-मोह-महांधकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्प-कांति,
विद्योतयज्जगदपूर्व-शशांकबिम्बम्।।

(m) सिंहासने ....सहस्ररश्मेः।।

उ. सिंहासने मणिमयूख- शिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्विलसदंशुलता-वितानं,
तुंगोदयाद्रि-शिरसीव सहस्ररश्मेः।।

(n) निम्न श्लोक का भावार्थ लिखिए -
ज्ञानं यथा त्वयि विभति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि।।

उ. भावार्थ- इसमें मणि व कांच के प्रकाश की तुलना करते हुए मणियों के प्रकाश को श्रेष्ठ बताया गया है, उसी प्रकार भगवान में जो केवलज्ञान है वह विष्णु, महादेव आदि देवों में नहीं पाया जाता है।

कक्षा : छठी – जैन धर्म विशारद (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) 'अच्छंदा' शब्द का अर्थ है-
(क) स्वाधीन (ख) पराधीन
(ग) त्यागी (घ) भोगी (ख)

(b) दुर्गति में गिरते हुए जीव को बचाने वाला है-
(क) श्रुत चारित्र धर्म (ख) भवनपति देवता
(ग) वैमानिक देवता (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

(c) एवंता मुनि ने मुक्ति प्राप्त की-
(क) क्षमा से (ख) आत्म ध्यान से
(ग) कनकावली तप से (घ) गुणरत्न संवत्सर तप से (घ)

(d) स्थलचर कौनसी नरक तक जा सकता है-
(क) छठी (ख) सातवीं
(ग) पाँचवीं (घ) चौथी (घ)

(e) युगलिक मनुष्य आयुष्य पूर्ण कर किस गति में उत्पन्न होते हैं-
(क) नरक गति में (ख) देव गति में
(ग) तिर्यंच में (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(f) पहली नारकी की आगति है-
(क) 40 (ख) 16
(ग) 25 (घ) 30 (ग)

(g) भगवान ऋषभदेव का महातेज किन दोषों से रहित है-
(क) सूर्य शाम अस्त होने से (ख) बादल ढक लेने वाले दोष से
(ग) राहु ग्रस लेने वाले दोष से (घ) इन सभी दोषों से (घ)

(h) 'देव दुन्दुभि' नामक प्रतिहार्य है-
(क) चतुर्थ (ख) पंचम
(ग) तृतीय (घ) द्वितीय (घ)

(i) उल्कापात में कितने प्रहर का अस्वाध्याय काल होता है-
(क) 4 प्रहर का (ख) 3 प्रहर का
(ग) 2 प्रहर का (घ) 1 प्रहर का (ख)

(j) असन्नी मनुष्य की आगति है-
(क) 179 (ख) 171
(ग) 371 (घ) 48 (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) मनुष्य की इच्छा आकाश के समान अनन्त है। (हाँ)
(b) तीसरा तप 'कनकावली' है। (नहीं)
(c) गज सुकुमाल बाल ब्रह्मचारी थे। (हाँ)
(d) पाँचवीं नरक की आगति 16 की है। (नहीं)
(e) नरक एवं देवगति से आयुष्य पूर्ण करके जीव पुनः नरक एवं देवगति में उत्पन्न नहीं होते हैं। (हाँ)
(f) तेउकाय, वायुकाय से निकला हुआ जीव आगामी एक भव में सम्यक्त्व प्राप्त नहीं कर सकता। (हाँ)
(g) भगवान में गुण और दोष दोनों होते हैं। (नहीं)
(h) 'चामर' तीसरा प्रतिहार्य है। (हाँ)

(i) रात्रि भोजन आश्रव का कारण है। (हाँ)

(j) चन्द्रग्रहण में कम से कम आठ और अधिक से अधिक बारह प्रहर तक अस्वाध्याय माना जाता है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	पिट्ठी	(क) परम पुरुष	पीठ
(b)	निहुओ	(ख) शुद्धि	एकाग्र मन से
(c)	सोही	(ग) मार्दव से	शुद्धि
(d)	मद्दवया	(घ) पीठ	मार्दव से
(e)	देवकुरु उत्तर के युगलिक	(च) एकाग्र मन से	पहले किल्विषिक तक
(f)	दूसरी नरक की आगति	(छ) 285	20
(g)	गर्भज की आगति	(ज) रात्रि भोजन त्याग	285
(h)	परमं पुमांस	(झ) संसार समुद्र को सुखाने वाला	परम पुरुष
(i)	भवोदधि शोषणाय	(य) 20	संसार समुद्र को सुखाने वाला
(j)	जैनियों की पहचान	(र) पहले किल्विषिक तक	रात्रि भोजन त्याग

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a)	मुझमें उसी जन्म में सिद्ध गति प्राप्त करने वाले उत्तम श्रमणों का वर्णन है।	'अन्तकृद्दशा सूत्र'
(b)	मैं प्रीति को नष्ट करता हूँ।	क्रोध
(c)	मेरे उपदेश से रथनेमि का मन पुनः संयम में स्थिर हो गया।	राजीमती
(d)	मैने संथारा लिए बिना ही सिद्ध बुद्ध मुक्त का पद प्राप्त किया।	गज सुकुमाल मुनि
(e)	मेरा आचरण करके जीव कर्मों की स्थिति बढाता है।	18 पापस्थानों का आचरण
(f)	मेरी आगति 40 की है।	दूसरे देवलोक की आगति
(g)	मुझमें उत्पन्न सभी भव्य जीव अवश्य मोक्ष में जाते हैं।	व्यवहार राशि में
(h)	मेरी आगति 18 की है।	चौथी नरक की आगति
(i)	मैं एक ऐसा प्रतिहार्य हूँ जो भगवान के धर्मराज होने की सर्वत्र घोषणा करता हूँ।	देव-दुन्दुभि
(j)	मेरा त्याग करने से मनोबल, आत्मबल बढ़ता है, अनेक रोगों से छुटकारा मिलता है व स्वास्थ्य ठीक रहता है।	रात्रि भोजन

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए: - 12x2 = (24)

(a) किसको देवता नमस्कार करते हैं ?

उ. जिसका मन धर्म में सदा रमण करता है।

(b) काम भोगों को किनके समान बताया गया है ?

उ. शल्य, विष, आशीविष सर्प के समान।

(c) मुक्तावली तप कैसे किया जाता है ?

उ. एक परिपाटी में 285 दिन का तप और 60 पारणे के दिन होते है। चारों परिपाटियाँ 3 वर्ष 10 मास में पूर्ण होती हैं।

(d) अहो भगवन्! जीवों का भव सिद्धिपना स्वभाव से है या परिणाम से ?

उ. हे जयन्ति! जीवों का भवसिद्धिपना स्वभाव से है परिणाम से नहीं।

(e) अहो भगवन्! जीव के भारी होने का क्या कारण है ?

उ. हे जयन्ति! अठारह पापस्थान के आचरण से जीव भारी होता है।

(f) छठी-सातवीं नारकी के जीव आयुष्य पूर्ण कर किसमें उत्पन्न होते हैं ?

उ. सन्नी तिर्यच पंचेन्द्रिय में।

(g) 30 अकर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की आगति लिखिए।

उ. 30 अकर्मभूमिज सन्नी मनुष्य की आगति 20 की है। 15 कर्मभूमिज मनुष्य एवं सन्नी तिर्यच पंचेन्द्रिय का पर्याप्ता।

(h) केवली की आगति तथा गति लिखिए।

उ. केवली की आगति 108 की- (15 परमाधार्मिक एवं 3 किल्विषी को छोड़कर 81 जाति के देवता, 15 कर्मभूमिज मनुष्य, 5 सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, बादर पृथ्वीकाय, अप्काय, वनस्पतिकाय और पहली से चौथी नरक तक, इस तरह 81+15+5+1+1+1+4 = 108 के पर्याप्ता)
केवली की गति मोक्ष की है।
रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(i) क्रोधाग्नि में मैं रात दिन हा, जल रहा हूँ हे प्रभो!
मैं लोभ नामक साँप से, काटा गया हूँ हे प्रभो।।

(j) रत्न त्रयी दुष्प्राप्य है, प्रभु से उसे मैंने लिया।
बहुकाल तक बहुबार जब, जग का भ्रमण मैंने किया।।

(k) रजोद्घात किसे कहते हैं ?

उ. वायु के कारण आकाश में चारों ओर धूल छा जाती है, उसे रजोद्घात कहते हैं।

(l) अनुयोग द्वार सूत्र के अनुसार आगम के प्रकार लिखते हुए अंतिम प्रकार का अर्थ भी लिखिए।

उ. 1. आत्मागम 2. अनन्तरागम 3. परम्परागम
गणधरों के शिष्य के लिए सूत्र-आगम अनन्तरागम तथा अर्थ आगम परम्परागम है। पश्चात्वर्ती आचार्यों, शिष्यों तथा प्रशिष्यों के लिए सूत्र और अर्थ रूप दोनों ही आगम परम्परागम कहलाते हैं।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - 12x3=(36)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(a) संसार..........................अपनी हँसी।।

उ. संसार ठगने के लिए, वैराग्य को धारण किया,
जग को रिझाने के लिए, उपदेश धर्मो का दिया।
झगड़ा मचाने के लिए, मम जीभ पर विद्या बसी,
निर्लज्ज हो कितनी, उड़ाऊँ, हे प्रभो! अपनी हँसी।।

(b) माता पिता..........................प्रीति से।।

उ. माता पिता के सामने, बोली सुनाकर तोतली,
करता नहीं क्या अज्ञ बालक, बाल्यवश लीलावली?
अपने हृदय के हाल को, वैसे यथोचित रीति से,
मैं कह रहा हूँ आपके, आगे विनय से प्रीति से।।

(c) वयं च..........................साहुणो।।

उ. वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ।
अहागडेसु रीयंते, फुप्फेसु भमरा जहा।।...साहुणो।।

(d) आयावयाहि..........................संपराए।।

उ. आयावयाहि चय सोगमल्लं,
कामे कमाहि कमियं खु दुक्खं।
छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं,
एवं सुही होहिसि संपराए।।

(e) खणमेत्तसोक्खा..........................काम भोगा।।

उ. खणमेत्तसोक्खा बहुकालदुक्खा,
पगामदुक्खा अणिगामसोक्खा।
संसारमोक्खस्स विपक्खभूया,

खाणी अणत्थाण उ काम भोगा।।

(f) जो सहस्स..........................परमो जओ।।

उ. जो सहस्सं सहस्साणं, संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाणं, एस से परमो जओ।।

(g) अहं च..........................भविस्ससि।।

उ. अहं च भोगरायस्स, तं चऽसि अंधगवण्हिणो।
मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर।।
जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिओ ।
वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठि-अप्पा भविस्ससि ।।

(h) मन्ये..........................भवान्तरेऽपि।।

उ. मन्ये वरं-हरिहरादय एवं दृष्टा,
दुष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि।।

(i) अहो भगवन्! श्रोत्रेन्दिय के वश में हुआ जीव कैसे कर्म बाँधता है ?

उ. हे जयन्ति! आयुष्य कर्म को छोड़कर बाकी सात कर्मो की प्रकृति यदि ढीली हो तो गाढी-दृढ़ करता है। थोड़े काल की स्थिति हो तो बहुत काल की स्थिति करता है। मन्द रस वाली हो तो तीव्र रस वाली करता है। आयुष्य बांधता है अथवा नहीं बांधता। असाता वेदनीय कर्म बार-बार बांधता है और चार गति रूप संसार में परिभ्रमण करता है।

(j) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के भुजपरिसर्प, खेचर, स्थलचर, उरपरिसर्प, जलचर कौन-कौनसी नरक तक उत्पन्न हो सकते हैं ?

उ. भुज परिसर्प-दूसरी नरक तक
खेचर-तीसरी नरक तक
स्थलचर-चौथी नरक तक
उरपरिसर्प-पाँचवीं नरक तक
जलचर-छठी एवं सातवीं नरक तक उत्पन्न हो सकते हैं।

(k) तीर्थंकर की आगति व गति लिखिए।

उ. आगति- तीर्थकर की आगति 38 की- (35 वैमानिक देवता 3 किल्विषिक छोड़कर) और पहली से तीसरी नरक, इनके पर्याप्ता)
गति-मोक्ष की है।

(l) रात्रि भोजन राक्षसी प्रवृत्ति है। कैसे ? समझाइए।

उ. जो हिंसक जानवर होते हैं वे रात को शिकार कर भोजन करते हैं। जो रात्रि में चलते फिरते हैं, खाते हैं, पीते हैं, उन्हें निशाचर कहा जाता है। निशाचर को राक्षस की उपमा दी गई है। रात्रि भोजी राक्षस ही होते हैं, इसलिए रात्रि भोजन राक्षसी प्रवृत्ति है।